प्रधान मंत्री (श्री नरेन्द्र मोदी) : अध्यक्ष महोदया, मैं माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर उन्हें धन्यवाद देने के लिए उपस्थित हुआ हूं। इस बार के संबोधन में राष्ट्रपति जी ने जिस प्रकार से देश को दिशा दी है, सरकार के विज़न की व्याख्या की है, सरकार के मुखिया के नाते मैं उनका हृदय से आभारी हूं। इस सरकार की पहचान ईमानदारी के लिए है। इस सरकार की पहचान पारदर्शिता के लिए है, गरीबों के लिए है, संवेदना के लिए है, राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने के लिए है, भ्रष्टाचार पर कार्रवाई करने के लिए है।…(व्यवधान) और तेज गति से काम करने के लिए है।…(व्यवधान)

वह टीवी का दृश्य अभी भी याद है, जब नोट ऐसे-ऐसे जेबों में रखे जाते थे।…(व्यवधान)

आज इस चर्चा में आदरणीय श्री मल्लिकार्जुन खड़गे जी, श्री भर्तृहरि जी, श्री वेणुगोपाल जी, श्रीमती हरसिमरत कौर बादल जी, श्री दिनेश त्रिवेदी जी, श्री मोहम्मद सलीम जी, श्रीमान् सौमित्र खान जी, ऐसे अनेक आदरणीय सदस्यों ने अपने विचार रखे हैं, अपनी राय रखी है।

एक सार्थक चर्चा का प्रयास हुआ है और सदन ने इन सबको जिस प्रकार से सुना, उनकी बातों को प्रोत्साहित किया, इसलिए विचारों की अभिव्यक्ति वाले भी और विचारों को प्रोत्साहन देने वाले इस पूरे सदन का मैं धन्यवाद करता हूं। कुछ आलोचनाएं भी हुईं, कुछ सिर-पैर के बिना की बातें भी हुईं, कुछ अपने मन को जो अच्छा लगता है, वह भी यहां बार-बार बोलने की आदत वालों ने बोल भी लिया। लेकिन मैं मानता हूं कि यह चुनाव का वर्ष है तो स्वाभाविक है, हर किसी की कुछ न कुछ मजबूरी है, कुछ तो बोलना ही पड़ता है। इसलिए वह प्रभाव रहना बड़ा स्वाभाविक था। लेकिन यह भी सही है कि हम लोग यहां से जाने के बाद जनता जनार्दन को अपने काम-काज का लेखा-जोखा देने वाले हैं। क्योंकि चुनाव का वर्ष है तो हमको जनता को जाकर अपना हिसाब देना है। मैं आप सभी को आगामी चुनाव में हैल्दी कम्पिटिशन के लिए अनेक-अनेक शुभकामनाएं देता हूं।

करोड़ों युवाओं का भी मैं अभिनंदन करना चाहता हूं, जो इस शताब्दी में पहली बार इस चुनाव में पार्लियामैंट के लिए वोट देने वाले हैं, वे सभी अभिनंदन के अधिकारी हैं। क्योंकि वोट डालना या मताधिकार प्राप्त करना एक छोटी घटना नहीं है। हमें भी हमारी इस नई पीढ़ी को, जो पहली बार 21वीं शताब्दी के पार्लियामैंट के चुनाव के वोटर बनने वाले हैं, उनका स्वागत भी करना चाहिए, क्योंकि वे एक प्रकार से देश के नीति-निर्धारक उस प्रक्रिया के हिस्सेदार बनने जा रहे हैं। इसलिए मैं उन नये मतदाताओं को, उन युवाओं को अनेक-अनेक बधाइयां देता हूं और मुझे विश्वास है कि नई पीढ़ी राष्ट्र को दिशा देने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगी।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, जब हम न्यू इंडिया की बात करते हैं, एक आशा और विश्वास की बात करते हैं और यह भी सही है कि निराशा के गर्त में डूबा हुआ व्यक्ति या समाज न खुद के लिए कुछ करता है, न उस पीढ़ी के लिए कुछ कर पाता है। कर वे ही सकते हैं, जो आशा और विश्वास से भरे हुए होते हैं। रोना रोने वालों को 5-10 अगल-बगल के लोग आश्वासन देने के लिए मिल जाएंगे, लेकिन परिवर्तन का संकल्प करने वाले लोग उनके पास कभी फटकते नहीं हैं। जब मैं न्यू इंडिया की बात करता हूं तो मैं स्वामी विवेकानंद जी की बात को उद्धृत करना चाहूंगा। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है …(व्यवधान) हो गया?…(व्यवधान) अतीत में जिस दौर से हमें गुजरना पड़ा, वे सभी आवश्यक थे, क्योंकि विनाश का जो काल बीच-बीच में आया, उससे निकलकर ही भविष्य का भारत आ रहा है।

वह अंकुरित हो चुका है। उसके नए पल्लव निकल चुके हैं और उस शक्तिशाली वृक्ष, विशालकाय वृक्ष का उगना शुरू हो चुका है। विपरीत परिस्थितियों में विकास की आस, विश्वास यही देश को आगे ले जाता है। चुनौतियों को चुनौती देना, यह देश का स्वभाव होता है। देश चुनौतियों को परास्त करता है। जो चुनौतियों से डर कर भागते हैं, वे नई-नई चुनौतियों को मोल लेते हैं। इसलिए चुनौतियों को ही चुनौती देना सामान्य मानवी की देश की आशा-अपेक्षाओं को पूर्ण करने में हम पूरी ताकत से जुटे हुए हैं। आज यहाँ 1947 से कुछ बातें बताई गईं। अच्छी बात है, लेकिन कभी लगता है

कि हम जब इतिहास की बात करते हैं तो दो पीरियड्स की चर्चा करते हैं- बीसी एंड एडी। आज जो मैंने भाषण सुना कि 1947 से 2014 तक तो मुझे लगता है कि शायद बीसी और एडी की उनकी अपनी व्याख्या है। बीसी की व्याख्या उनकी है- बिफोर कांग्रेस। मतलब कि कांग्रेस के पहले कुछ नहीं था इस देश में। सब तबाह था, गर्त में था और एडी का मतलब है- आफ्टर डायनेस्टी। यानी जो कुछ भी हुआ, वह उन्हीं के बाद हुआ। लेकिन आखिर किसी काम को कम्पेरेटिव देखना ही पड़ता है और वह बुरा है ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है। हमें इतना विचलित क्यों होना चाहिए? साढ़े चार साल पहले क्या होता था और आज क्या है। साढ़े चार सालों में किस प्रकार से हम आगे बढ़े हैं। भारत साढ़े चार सालों में 10वें, 11वें नम्बर की अर्थव्यवस्था से आज छठे नम्बर पर पहुँच गया है और यह भूलिए मत कि जब 11 नम्बर पर पहुँचे थे तब इसी सदन में यहाँ पर बैठे हुए लोगों ने, जो कि आज वहाँ भी नहीं दिखते हैं, उन्होंने 11 पर पहुँचने का बड़ा गौरवगान किया था। मैं समझ नहीं पाता हूँ कि जिनको 11 पर पहुँचने पर गौरव दिखता था, उनको 6 पर पहुँचने में पीड़ा क्यों होती है, दर्द क्यों होता है। पहले की तुलना में सबसे ज़्यादा फॉरेन डायरेक्ट इनवैस्टमेंट आज भारत में आ रहा है।

मेक इन इंडिया की ताकत, मैन्यूफेक्चरिंग के नए प्रतिमान प्रस्थापित कर रही है। दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा स्टील प्रोड्यूसर आज भारत है। दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल फोन बनाने वाला भारत है। दुनिया का चौथा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल मैन्यूफेक्चरर आज हिंदुस्तान है। फसलों और दूध का रिकॉर्ड उत्पादन आज भारत कर रहा है। इंटरनेट डेटा सबसे सस्ता और इंटरनेट डेटा सबसे ज़्यादा कन्जम्प्शन अगर दुनिया में कहीं है तो हिंदुस्तान में है। स्टार्टअप इको सिस्टम ने जिस प्रकार से अपनी जगह बनाई हैं, अपनी जड़ें जमाई हैं आज बड़ी-बड़ी मल्टीनेशनल्स को भी वह चुनौती दे रहे हैं। एविएशन सेक्टर सबसे तेज़ गति से आगे बढ़ा रहा है लेकिन विपक्ष में हैं, विरोध करना ज़रूरी है। विरोध करना चाहिए। मोदी की आलोचना करनी चाहिए, हमारी नीतियों की आलोचना करनी चाहिए, अच्छी बात है। लोकतंत्र में बहुत ज़रूरी भी है, लेकिन मैं देख रहा हूँ कि हम मोदी की

आलोचना करते-करते, बीजेपी की आलोचना करते-करते देश की बुराई करने में लग जाते हैं। इससे देश का हित नहीं होगा।

हममें से किसी को भी, गलती से भी, देश की बुराई हो, ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए। …(व्यवधान) बहुत-सी बातें हैं।…(व्यवधान) लंदन में जाकर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर-करके देश की क्या इज्जत बढ़ा रहे हो? झूठी प्रेस कॉन्फ्रेंस करके, और आज मुझसे पूछ रहे हो कि कुछ नहीं कहा? मैं अपनी मर्यादा में रहूं, वही ज्यादा अच्छा है।…(व्यवधान)

आज हमारे खड़गे जी बता रहे थे कि मोदी जी जो बाहर पब्लिक में बोलते हैं, राष्ट्रपति जी ने भी वही बात सदन में कही। इसका मतलब कि यह सिद्ध हो गया कि सच बोलने वालों को बाहर दूसरा कुछ बोलना, अन्दर अलग बोलना, ऐसा नहीं है। जो सच बोलता है, वह बाहर भी वही बोलता है, अन्दर भी वही बोलता है। मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने इस बात को रजिस्टर किया कि हम सच बोलते हैं, पब्लिक मीटिंग में भी सच बोलते हैं, जन सभा में भी सच बोलते हैं, लोक सभा में भी सच बोलते हैं। प्रधान मंत्री भी सच बोलता है, राष्ट्रपति जी भी सच बोलते हैं। अब आपकी मुसीबत है कि सच सुनने की आदत भी चली गयी है। आप इतना झूठ सुन चुके हो कि आपकी सच सुनने की आदत ही चली गयी है।

आपने कहा कि मोदी संस्थाओं को खत्म कर रहा है, बर्बाद कर रहा है। हमारे यहां एक कहावत है - 'उलटा चोर चौकीदार को डाँटे।' आप जरा बताइए। मुझे लगता है कि विचार करने की आवश्यकता है। देश में आपातकाल थोपा काँग्रेस ने, लेकिन कहते हैं कि इंस्टीट्यूशंस को मोदी बर्बाद कर रहा है। सेना को अपमानित किया काँग्रेस ने और कहते हैं कि मोदी बर्बाद कर रहा है। देश के सेनाध्यक्ष को गुंडा कहा, कहने वाले काँग्रेस के, और कहते हैं कि मोदी इंस्टीट्यूशंस बर्बाद कर रहा है। कहानियाँ गढ़ी जाती हैं तख्ता पलट करने की और हिन्दुस्तान की सेना की इज्जत को कितना बड़ा गहरा घाव लगा

है! आपको मालूम नहीं है। आपने हफ्ते, दो हफ्ते शायद अपनी राजनीति कर ली होगी। लेकिन, यह जो आपने पाप किया है, मैं समझता हूं कि हमारी सेना के दिलों पर जो घाव लगा है, भारत की सेना तख्ता पलट करने का काम करे, आज़ादी के इतने सालों में अच्छे दिन आए हों, बुरे दिन आए हों, वीक प्रधान मंत्री रहे हों, वीक गवर्नमेंट्स रही हों, एक सरकार रही हो, मिली-जुली सरकार रही हो, पर कभी देश की सेना ने ऐसा पाप नहीं किया। हम ये बातें कह दें, जस्ट अपनी राजनीति के लिए! मैं मानता हूं कि हम लोगों ने बहुत बुरा किया है। हम जिम्मेदार लोग हैं। शासन में बैठे लोगों के द्वारा इस प्रकार की बातें हों और आप कहें कि हम संस्थाओं को बर्बाद करने में लगे हुए हैं?

इस देश का चुनाव आयोग विश्व के लिए गौरव का केन्द्र बन सकता है। छोटी-मोटी शिकायतें रहने के बावजूद भी सभी राजनीतिक दल चुनाव आयोग के निर्णयों को मान कर चल रहे हैं। क्या हम उसको भी बर्बाद करके रहेंगे? आज हम उसको बर्बाद करने में लगे हुए हैं। क्या हम उस दिशा में कुछ सोच सकते हैं?

उसी प्रकार से, अपनी विफलता ई.वी.एम. पर, मैं तो हैरान हूं! देश बजट की चर्चा करता है और ये ई.वी.एम. का रोना रो रहे थे। आप इतने डरे हुए, यह हो क्या गया है आप लोगों को? …(व्यवधान)

न्यायपालिका को कांग्रेस धमकाती है। न्यायपालिका के निर्णयों पर कांग्रेस से जुड़े हुए लोग जिस प्रकार से बयानबाजी कर रहे हैं, पहले ऐसा कभी नहीं हुआ है। न्यायपालिका का निर्णय अच्छा हो या बुरा हो, लेकिन उसका सम्मान इसलिए किया जा रहा है, क्योंकि इंस्टीट्यूशन आखिर बचानी पड़ेगी। लेकिन हमें पसंद न हो इसलिए कुछ भी बोलते हैं, कुछ भी बुलवा लें, कुछ भी लिखवा दें? आप पूरी ज्यूडिशिएरी को डराने के लिए महाभियोग के नाम से पूरी व्यवस्थाओं को हिलाने के लिए कोशिश कर रहे हैं और आप हमें कह रहे हो?

यह कांग्रेस पार्टी जिसने योजना आयोग को 'जोकरों का समूह' कहा था, मालूम है न किसने कहा था। आज आप प्लानिंग कमीशन के इतने गीत गा रहे थे, उसी प्लानिंग कमीशन को आपके एक भूतपूर्व प्रधान मंत्री ने 'जोकरों का समूह' कहा था। इंस्टीट्यूशन का सम्मान होना चाहिए। एक शब्द पकड़ लिया, लेकिन बाकी जरा अपना करोबार भी तो देखो।

धारा 356 का दुरुपयोग करीब-करीब सौ बार आपने किया। चुनी हुई सरकारों को आपने बर्खास्त कर दिया और अकेली श्रीमती इंदिरा गांधी ने 50 बार उसका उपयोग किया। 50 बार सरकारों को गिराया। यह 2019 किस चीज की एनीवर्सरी है, याद करें, जरा मैं केरल के मित्रों को कहना चाहता हूं। ...(व्यवधान) 1959 में जब नेहरू जी प्रधान मंत्री थे और इंदिरा जी कांग्रेस की अध्यक्षा थीं, वह केरल गई थीं। पता नहीं क्या देखा, क्या पाया, क्या सुना, आते ही केरल की कम्युनिस्टों की चुनी हुई सरकार को बर्खास्त कर दिया। यह 2019 एनीवर्सरी है। आप संस्थाओं के मान-सम्मान की बातें करते हो? किस प्रकार से आपने देश के साथ क्या किया, आपने एन.टी.आर. के साथ किया? आपने एम.जी.आर. के साथ क्या किया? इतना ही नहीं, बल्कि आप मंत्रिमंडल के निर्णय तथा कैबिनेट के डिसीजन को प्रेस कांफ्रेस में जाकर कैसे काट रहे हैं! कौन-सी सैंक्टिटी, कौन-सी संस्थाओं का सम्मान? इसलिए कृपा करके मोदी पर उंगली उठाने से पहले आपको यह पता होना चाहिए कि आपकी चार उंगलियाँ आपकी तरफ होती हैं।

खड़गे जी एक डीसेन्ट व्यक्ति हैं, इसमें कोई दोराय नहीं, लेकिन पता नहीं क्या मज़बूरी है, किस मुसीबत में फंसे हैं।...(व्यवधान) एक डीसेन्ट व्यक्ति हर बार डिसेन्ट, हर बार डिसेन्ट, हर बार डिसेन्ट...(व्यवधान) लेकिन आप डीसेन्ट हैं, इस बात को तो मैं इस सदन के सामने कहूंगा। यह बात सही है कि आज उन्होंने कहा कि मैं जरा फर्स्ट एड ले लूं, लेकिन करीब 36 घंटे के बाद वह पूछ रहे थे कि फर्स्ट एड की जरुरत है क्या। आप एक सीनियर व्यक्ति के नाते, हम जैसे लोगों की चिंता कर रहे हैं, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया जी, इन सारी मुसीबतों के मूल में एक सबसे बड़ा कारण यह है कि एक गरीबी से उठा हुआ इंसान, जिसने कभी दिल्ली के गलियारे देखे नहीं, उसने इतनी बड़ी सल्तनत को चुनौती दे दी, वे पचा नहीं पा रहे हैं। वे तो यह मान कर चलते हैं कि इस देश की गद्दी हमारे मालिकी की है। एक कोने में पड़ा हुआ ऐसा इंसान यहां आ गया, यह बात इनके दिमाग से जाती नहीं है। वह जो नशा है, वह नशा परेशानी कर रहा है।

आदरणीय अध्यक्ष महोदया, अब जरा हिसाब की बातें चल रही हैं कि हमारी सरकार, तुम्हारी सरकार, तो मैं भी बता दूं। 55 साल, मेरे 55 महीने। देखिए स्वच्छता का दायरा, 55 साल में 2014 का 40 पर्सेंट था, आज साढ़े चार साल में, 55 महीने के अंदर 98 पर्सेंट क्रॉस कर गया है। साढ़े 4 साल में 10 करोड़ से ज्यादा शौचालय बने हैं। जो लोग कहते हैं कि यह सरकार अमीरों के लिए है, मुझे खुशी है कि मेरे देश के 10 करोड़ अमीरों के लिए मैंने शौचालय बनाया है। वही मेरे अमीर हैं, वही मेरा ईमान है, वही मेरी जिंदगी है, उन्हीं के लिए जीता हूं, उन्हीं के लिए यहां आया हूं। 55 साल में 12 करोड़ गैस कनेक्शन और 55 महीने में 13 करोड़ गैस कनेक्शन और उसमें 6 करोड़ उज्ज्वला। काम किस गति से होता है और किसके लिए होता है, इसका आप अंदाजा लगा सकते हैं।

बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया । गरीबों के नाम पर बातें कीं, राजनीति की, चुनाव जीतते गए, वोट बटोरते गए, लेकिन हमारे देश में 55 साल में 50 प्रतिशत लोगों के बैंक के खाते थे, 55 महीने में अब वह शत-प्रतिशत करने में हम यशस्वी हुए हैं। आपको तकलीफ होती है 18 हजार गांवों में बिजली पहुंचाई। आप आंकड़ा देते हैं, यानी 1947 के पहले इस देश के किसी गांव में बिजली नहीं थी । 1947 के पहले इस देश के किसी गांव में बिजली नहीं थी, वहीं से शुरू कर रहे हैं आप, वह बी.सी. और ए.डी. वाली बात है। अगर सचमुच में जिस गति से पिछले 55 महीने में सरकार चली है, आजादी के बाद इतनी रुकावटें नहीं थीं, इतना विरोध नहीं था, इतने कानूनों की परेशानी नहीं थी, इतना मीडिया भी नहीं था, अगर आप उस समय काम करना चाहते, तो पहले दो दशक में हिंदुस्तान के हर गांव में

बिजली पहुंच जाती। यह काम जो बीस साल में होना चाहिए था, वह मुझे आकर पूरा करना पड़ा है। इतना ही नहीं आपका 2009 का मैनिफेस्टो देख लीजिए, आपका 2014 का मैनिफेस्टो देख लीजिए। आपने मैनिफेस्टो में यह कहा है कि हम 3 साल के भीतर, आपने 2009 में कहा 3 साल के भीतर, 2014 में कहा 3 साल के भीतर हर घर में बिजली पहुंचाएंगे । आपके मैनिफेस्टो में है कि बिजली पहुंचाएंगे । मैं हैरान हूं, गरीबी हटाओ, गरीबी हटाओ तो आप एक्सटेंड करते गए हैं, लेकिन 2009 में भी 3 साल, 2014 में भी 3 साल और आज घरों में बिजली पहुंचाने के लिए मुझे रात-दिन मेहनत करनी पड़ रही है। ढाई करोड़ परिवारों तक बिजली पहुंचाने का काम पूरा कर दिया है और आने वाले दिनों में शत-प्रतिशत इलेक्ट्रिफिकेशन का काम करने का गर्व हम प्राप्त करेंगे, मैं आपको विश्वास से कहना चाह रहा हूं। कुछ लोग हैं जो भ्रमित करने का प्रयास करेंगे, लेकिन आंकड़े झुठला नहीं सकते हैं।… (व्यवधान)

2014 में 30 साल के बाद देश की जनता ने पूर्ण बहुमत वाली सरकार चुनी।

देश अनुभव करता है, जब मिलावटी सरकार होती है तब क्या हाल होता है और अब तो महामिलावट आने वाला है। पूर्ण बहुमत वाली सरकार होती है तो कितने निर्णय कर सकती है, कितनी गति से आगे बढ़ सकती है।…(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : आपका शुक्रिया, धन्यवाद।

श्री नरेन्द्र मोदी: महामिलावट यहां पहुंचने वाले नहीं हैं। यह महामिलावट, आप कोलकाता में इकट्ठा करो, देख लो, यह महामिलावट का हाल देखो, केरल में मुंह नहीं देख पाएंगे एक दूसरे का…(व्यवधान) महामिलावट का नेतृत्व करने वालों को उत्तर प्रदेश ने बाहर कर दिया। …(व्यवधान) महामिलावट देखने वालों को …(व्यवधान) यह महामिलावट का खेल …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष: प्लीज़, अब हो गया।

…(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: अस्थिर सरकार, अकल्पनीय सरकार, इसके कारण यह महामिलावट…(व्यवधान) देश ने 30 साल यह स्थिति देखी है।…(व्यवधान) अब तो जो हैल्थ कांशियस सोसाइटी है, वह भी मिलावट से दूर रहती है। हैल्दी डेमोक्रेसी वाले भी महामिलावट से दूर रहने वाले हैं।…(व्यवधान)

जब बहुमत वाली सरकार होती है, देशवासियों के लिए समर्पित सरकार होती है तो काम कैसे होता है? वर्ष 2014 से पहले आपकी सरकार थी, गरीबों को घर मिलना चाहिए, 1947 से हर सरकार ने इस पर विचार किया है। 2014 से पहले पांच साल आपकी सरकार ने 25 लाख घर बनाए, हमने 55 महीने में 1 करोड़ 30 लाख घर बनाकर चाबी दे दी। घर भी ऐसे जिसमें शौचालय है, बिजली है, गैस का कनैक्शन है। ऐसे ही चार दीवारी बनाकर काम पूरा नहीं कर रहे हैं। आज आप के लोग भी आकर कहते हैं कि हमारे इलाके में आवास अलॉटमेंट करवा दीजिए, पैसे गरीब के खाते में सीधे जमा हो रहे हैं, बिचौलिए नहीं हैं।

आपके घोषणापत्र में था, 2009 में था और 2014 में भी था। आप तीन साल की बात कहां से ले आए, मुझे मालूम नहीं, तीन साल की आपकी क्या डेफिनेशन है, यह भी मुझे मालूम नहीं। आपने कहा कि तीन साल में हर पंचायत को हम ऑप्टिकल फाइबर नैटवर्क से जोड़ेंगे, डिजिटल इंडिया की तरफ आगे बढ़ेंगे। वही बात 2009 में कही, वही बात 2014 में कही । जब हम आए, तब 59 गांवों में ऑप्टिकल फाइबर नैटवर्क पहुंचा था, यानी आइडिया नया है। अब आप कहेंगे कि हमारी योजना थी। आपकी योजना थी, मेनिफैस्टो में लिखा है कि करेंगे, लिख दिया। आपने काम शुरू किया, 2014 में पहुंचते-पहुंचते 59 गांवों में ब्रॉडबैंड कनैक्टिविटी जो थी, वह 55 महीने की हमारी सरकार में 1 लाख 16 हजार गांवों में ब्रॉडबैंड कनैक्टिविटी पहुंच गई। आप वादे करते रहे।

आज खड़गे साहब का शेर-ओ-शायरी का मिज़ाज़ था, हो सकता है कि कविता जो हुस्न से शुरू होती थी, उस पर उनकी नजर गई। मुझे समझ नहीं आया कि उनको हुस्न वाली एक पंक्ति क्यों पसंद आई। आप जिस परिवेश में पैदा होकर आए हैं, आपका परिवार जिस संघर्ष से निकला है, मैं जानता हूं और मैं गर्व करता हूं आपके परिवार के जीवन पर।

अगर वे चीजें आपको याद रहती हैं, तो इस हुस्न वाली पंक्ति की तरफ आपकी नज़र नहीं जाती। अगर वह होता, तो आपकी नज़र इस पर जाती और मुझे तो आप लोगों के कारण बराबर यह बात दिन-रात याद रहती।…(व्यवधान) उस कविता में लिखा है-

"जब कभी झूठ की बस्ती में सच को तड़पते देखा है,
तब मैंने अपने भीतर किसी बच्चे को सिसकते देखा है।"

आपके झूठ के कारोबार से क्या होता है, यह कविता में आपको दिखाई देना चाहिए, लेकिन वह नहीं देख पाए। …(व्यवधान)

श्री रामदास अठावले : यह कांग्रेस वालों का धोखा है। …(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी: उसी कविता में आगे लिखा है अगर संवेदना नाम की चीज बची होती, लेकिन सत्ता के गलियारों में रहने के कारण शायद वह छूट गया होगा। अगर वह बचा होता, तो उसके आगे की पंक्ति आपके दिल को जरूर छू जाती। आगे की पंक्ति है –

"अपने घर की चारदीवारी में अब लिहाफ में भी सिहरन होती है,
जिस दिन से किसी को गुर्बत में सड़कों पर ठिठुरते देखा है।"

इसके लिए जब संवेदना होती है, दर्द होता है, तब जाकर यह बात बनती है।…(व्यवधान) कांग्रेस के 55 साल -- सत्ता भोग के 55 साल, हमारे 55 महीने -- सेवा भाव के 55 महीने। 55 साल का सत्ता भोग और 55 महीने का सेवा भाव और जब नीति स्पष्ट हो, नीयत साफ हो, इरादे नेक हों,

निष्ठा अटल हो तो हम चौबीसों घंटे गरीबों के लिए, देश के कल्याण के लिए, देश के विकास के लिए अपने-आप को समर्पित करने के लिए एक नई ऊर्जा, नई प्रेरणा निरंतर पाते रहते हैं।...(व्यवधान) आप किस प्रकार से काम करते हैं? मैं 21वीं सदी के मतदाताओं को जरूर याद कराना चाहूंगा कि किस नीयत से 55 साल तक सत्ता भोग चला है। ...(व्यवधान) आप देखिए, जब कॉमनवैल्थ गेम्स हुए, तब देश की आन, बान, शान पूरे विश्व में पहुंचाने का एक स्वर्ण अवसर था, लेकिन उस समय एक तरफ हमारे खिलाड़ी पदक जीतने के लिए मेहनत कर रहे थे और ये कॉमनवैल्थ में अपनी वैल्थ को जिताने में लगे थे। 2-जी स्पैक्ट्रम का आबंटन, आप देख लीजिए, 2-जी स्पैक्ट्रम में क्या हुआ। ...(व्यवधान) यह सत्ता भोग का परिणाम था और इनकी नीयत यही -- अपना और अपनों का फायदा करना, हमारी नीयत -- लोगों को सस्ता डेटा, फोन पर बात करने का खर्च कम हो। और इसके लिए स्पैक्ट्रम की नीलामी की व्यवस्था हमने विकसित की। बैंकिंग व्यवस्था -- क्या करके रखा था? फोन बैंकिंग करता था। नामदार को पता चले कि इसको मदद की जरूरत है, बैंक को फोन चला जाता था, रुपये निकल जाते थे, पहुंच जाते थे। किस काम के लिए, कौन ले जाएगा, कहां ले जाएगा, अब सब निकल रहा है, तो परेशानियां बढ़ रही हैं।...(व्यवधान)

एक बात को नहीं भूल सकते कि स्वतंत्रता के बाद, 2008 तक बैंकों ने कुल 18 लाख करोड़ रुपयों का कर्ज दिया, लोन दिया, लेकिन सत्ता भोग की जो राजनीति चलती थी, जो देश चलाने का तरीका था, उस सत्ता भोग के 55 साल का परिणाम देखिए। वर्ष 2008 से 2014 तक, छः साल में यह 18 लाख करोड़ रुपये बढ़कर 52 लाख करोड़ रुपये हो गए। यह फोन बैंकिंग का परिणाम था, लोगों के पैसे थे, लूटे जा रहे थे और कोई पूछने वाला नहीं था। यह आपका तरीका था । अब 21वीं सदी के मतदाताओं को पता होना चाहिए, तब उनकी उम्र इतनी छोटी रही होगी, जब ये सब खेल चले, अब उनको शिक्षित करना हम लोगों का काम है। ...(व्यवधान) मुद्रा योजना से हमने 7 लाख करोड़ रुपये दिए।...(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : एनपीए कितना है, बताइए?

श्री नरेन्द्र मोदी: यह वही है जो **2014** में आप छोड़कर गए**,** यह तो ब्याज बढ़ रहा है। ब्याज बढ़ रहा है**,** एक नया एनपीए नहीं बढ़ रहा है। यह आप छोड़कर गए**,** उसका ब्याज बढ़ रहा है। हम कानून ऐसे लाए हैं कि **3** लाख करोड़ रुपये वापस आने शुरू हुए हैं।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षा जी, हमने 7 लाख करोड़ रुपये मुद्रा योजना से दिए। उन लोगों को दिए, जिनके पास कोलैट्रल गारन्टी देने की भी कोई ताकत नहीं थी और उन्होंने स्वरोजगार खड़ा किया, उन्होंने रोजगार के अवसर पैदा किए। यह काम हमने किया है।…(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय (दमदम): नीरव मोदी कितना रुपया लेकर भाग गया?

श्री नरेन्द्र मोदी: जो भाग गए हैं**,** वे ट्विटर पर रो रहे हैं कि मैं तो **9** हजार करोड़ रुपये लेकर निकला था**,** लेकिन मोदी ने मेरे **13** हजार करोड़ रुपये जब्त कर लिए। वे रो रहे हैं**,** ट्विटर कर रहे हैं और बोल रहे हैं कि मैं सुबह उठता हूं तो पता चलता है कि आज मेरी इस सम्पत्ति का पता चल गया और वह भी जब्त हो गई। दुनिया के किसी देश में सम्पत्ति है तो वह भी जब्त हो गई। ये कानून हमने बनाए। यह कानून हमने बनाया। लूटने वालों को आपने लूटने दिया**,** हमने कानून बनाकर उनको वापस लाने की कोशिश की। …(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया**,** मुझे लगता है कि हमारे कांग्रेस के मित्रों ने कुछ काम आउटसोर्स कर दिए हैं। वैसे अभी दो दिन पहले मदद की थी तो थोड़ा तो करना पड़ेगा। **…(**व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष महोदया, कांग्रेस ने यह कहा, जब सर्जिकल स्ट्राइक की बात आई, मैं यहां उरी फिल्म की चर्चा नहीं कर रहा, मैं सर्जिकल स्ट्राइक की बात कर रहा हूं। तब कांग्रेस ने कहा कि हमारे समय भी सर्जिकल स्ट्राइक हुई थी ।…(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे: छ: बार हुई थी । क्या मैं डेटवाइज बताऊं?

श्री नरेन्द्र मोदी: हाँ-हाँ, आपके पास सब कुछ है। ठहरिए, आपके पास सब कुछ है। आपको घण्टों तक बोलने दिया है। ...(व्यवधान) उस समय सेना की वह हालत ही नहीं रहने दी थी आपने, सेना को आपने एक प्रकार से निहत्था बना दिया था। वह स्थिति नहीं थी कि सर्जिकल स्ट्राइक करने का कोई निर्णय कर सके। यह हाल आपने बनाकर रखा था। वे दिन थे, जब बुलेट प्रूफ जैकेट्स तक उपलब्ध नहीं थीं। आप सर्जिकल स्ट्राइक की सोच भी कैसे सकते थे और आप हिन्दुस्तान की आंखों में धूल झोंक रहे हैं। न कम्यूनिकेशन डिवाइसेस थीं, न हेलमेट थे और न अच्छे प्रकार के जूते थे। मैं युद्ध सामग्री की बात ही नहीं कर रहा हूं, ये सामान्य व्यवस्थाओं की बात है। 2009 में भारतीय सेना ने एक लाख 86 हजार बुलेट प्रूफ जैकेट्स की मांग की, पांच साल बाद भी, 2014 तक बुलेट प्रूफ जैकेट्स नहीं खरीदी गईं। अब वे लोग सर्जिकल स्ट्राइक की बातें करते हैं। यह स्थिति जानने के बाद 2016 में हमने 50 हजार बुलेट प्रूफ जैकेट्स की खरीद की।

2018 में 1 लाख, 86 हजार बुलेट प्रूफ जैकेट्स हमने अपने जवानों को पहुंचाने के लिए ऑर्डर दे दिया। अगर 2014 में, उसके बाद भी देश की जनता ज्यादा समझदार है, इसलिए गलती नहीं करती है, लेकिन 2014 के बाद भी यूपीए की सरकार बनी होती तो देश का गौरव, तेजस लड़ाकू विमान, आज जमीन पर ही खड़ा होता, वहां पार्किंग में पड़ा होता, वह हवा में नहीं जाता। जुलाई, 2016 में हमने 45 स्क्वाड्रन में शामिल किया और 83 तेजस विमान खरीदने की स्वीकृति दे दी। आपको इसकी चिंता नहीं थी। सेना ताकतवर हो, आपने यह कभी नहीं सोचा।...(व्यवधान) देश की रक्षा कर रहे जवानों के लिए आप में इतनी संवेदनहीनता क्यों थी? कांग्रेस की पिछली सरकार ने पिछले दस सालों में सेना, वायु सेना और नेवी की आवश्यकताओं को नरजअंदाज क्यों किया? कल्पना कीजिए, उस समय हमारे दुश्मन देशों ने कोई हरकत की होती तो आज देश कहां खड़ा होता? आपने इतना criminal negligence किया है। देश इसको कभी माफ नहीं कर सकता है। आज आवश्यकता है कि जिस प्रकार के वातावरण के बीच में हम रह रहे हैं, हमारी सेना का आधुनिकीकरण

होना चाहिए और उसके लिए मुझे यह बताइए कि तीन दशक हो गए, क्या कारण है कि देश ने एक भी next generation fighter planes हमारी सेना के हाथ में नहीं दिया है। Not a single in 30 years. जबकि हमारे पड़ोस में हर प्रकार से युद्ध सामर्थ्य बढ़ता चला जा रहा है, लेकिन क्या यह देश की सुरक्षा का यह विषय, देश के साथ विश्वासघात नहीं था? क्या इसकी कोई जिम्मेवारी नहीं है।…(व्यवधान)

दादा को राफेल के बारे में सुनना है। एक-एक आरोप का जवाब निर्मला जी ने गिन-गिन कर दिया है। सुप्रीम कोर्ट ने हर पहलू को तलाश करके देखा है और सवाल यह है कि कांग्रेस पार्टी नहीं चाहती है कि देश की सेना के हाथ में, हमारी वायु सेना मजबूत हो। मैं गंभीर आरोप लगा रहा हूं। …(व्यवधान) कांग्रेस पार्टी नहीं चाहती है कि हमारी वायु सेना मजबूत हो।…(व्यवधान) राफेल का सौदा रद्द हो, इसके पीछे आप किसकी भलाई के लिए लगे हो?…(व्यवधान) आप किस कंपनी की भलाई के लिए खेल खेल रहे हो?…(व्यवधान) कौन लोग हैं, जिन्होंने आपको लगाया है?…(व्यवधान) आप देश की सेना के साथ यह व्यवहार करते हो? आपने तीस साल तक देश की सेना को निहत्था बना कर रखा था…(व्यवधान) इतिहास गवाह है। …(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे: अध्यक्ष महोदया, …(व्यवधान)

HON. SPEAKER: Nothing will go on record.

… (*Interruptions*)… *

श्री नरेन्द्र मोदी : इतिहास गवाह है कि कांग्रेस पार्टी और उनकी यूपीए की सरकार का सत्ता भोग का काल खंड रक्षा सौदों में 'दलाली' के बिना कभी काम नहीं हुआ।…(व्यवधान) मैं सोच रहा था कि राफेल को लेकर ये 'झूठ' भी इतने कॉन्फिडेंस से क्यों बोलते हैं। जब मैं डीटेल देखने लगा तो मुझे पता

* Not recorded.

चला कि वह यह मान कर चले हैं कि पिछले 55 सालों में, सत्ता भोग के काल में एक भी रक्षा सौदा बिना 'दलाली' नहीं हुआ है। कहां से कोई चाचा, कोई मामा ...(व्यवधान) जब पारदर्शिता से, ईमानदारी से देश की वायु सेना को मजबूत करने का काम हो रहा है तो ये कांग्रेस के लोग ज़रा बौखला जाते हैं।

उनको सच सुनने की आदत रही नहीं है और अब परेशानी है। चेहरे उतरे हुए हैं और कारण यही है, क्योंकि अब राज़दार को पकड़कर लाए हैं। एक नहीं, दो नहीं, तीन-तीन राज़दार सामने आए हैं। आपकी चिंता यह है कि ये कैसे पकड़े जाते हैं, कैसे लाए जाते हैं, कैसे पूछा जाता है? छुप-छुपकर चिट्ठियां पकड़ाई जाती हैं और इसलिए आपकी बेचैनी मैं समझ सकता हूं। जहां तक काले धन का सवाल है, भ्रष्टाचार का सवाल है, हम आज भी जीरो टोलरेंस के साथ प्रतिबद्ध हैं। दीमक की तरह भ्रष्टाचार ने देश को तबाह किया है। यहां कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होगा, जो यह नहीं चाहता होगा कि देश से भ्रष्टाचार खत्म न हो। हर कोई चाहता है कि भ्रष्टाचार खत्म हो, लेकिन किसी न किसी के हाथ-पैर कहीं फंसे हुए थे, इसलिए चाहते हुए भी कर नहीं पाते थे। हमारा कोई बैगेज नहीं है और न हमें किसी पर एहसान करना है और न किसी के एहसान पर हम जिंदा हैं। हम तो सवा सौ करोड़ देशवासियों के आशीर्वाद से जिंदा हैं और इसलिए जी जान से काला धन हो या भ्रष्टाचार हो, उसके खिलाफ लड़ाई लड़ने का माद्दा रखते हैं और अभी तक पीछे नहीं हटे हैं और उन प्रक्रियाओं को कर रहे हैं। आठ करोड़ लोगों को जो इस व्यवस्था में थे, जो दलाली लेते थे, आधार की व्यवस्था से आठ करोड़ लोगों को बाहर कर दिया। क्या किया दादा? यह किया। बेनामी सम्पत्ति का कानून तो कितने साल से बना पड़ा था, संसद में बहस कर ली, दुनिया को मैसेज दे दिया, वोट बटोर लिए, लेकिन उस कानून को आगे नहीं बढ़ाया गया। इसी प्रकार रख लिया, लेकिन हमने आकर उस पर कानून बनाया और बेनामी सम्पत्ति आज जब्त हो रही है। उसी के कारण लोग परेशान हैं और आज प्रॉपर्टी निकल रही है। कहां-कहां, कैसे-कैसे, कौन-कौन, किसके लिए, कब-कब, और इसलिए परेशानी होना बहुत स्वाभाविक है।

माननीय अध्यक्षा जी, मैं सदन को विश्वास दिलाना चाहता हूं और सदन के माध्यम से देश को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हम जो संकल्प लेकर चले हैं, इसमें हम पीछे हटने वाले नहीं हैं। चुनौतियां बहुत बड़ी हैं, रुकावटें अनेक हैं, लेकिन जितनी रुकावटें हैं, उनसे ज्यादा मजबूत हमारा संकल्प है। जितनी रुकावटें हैं, उनसे ज्यादा मजबूत हमारे इरादे हैं। आपको नोटबंदी की परेशानी हो रही है। नोटबंदी के बाद तीन लाख फर्जी कम्पनियां जो रुपयों का कारोबार करती थीं, डोनेशन लेना-देना आदि करती थीं, यह सब बंद हो गया । यह कारोबार चलता रहता, यदि पुराना सिस्टम होता। यह 55 महीने वाली सेवा भाव वाली सरकार है, राष्ट्र को समर्पित सरकार है, इसलिए यह संभव हुआ है। आईबीसी कानून के तहत तीन लाख करोड़ रुपये वापस आए । …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षा जी, एक और जानकारी शायद सदन में बहुत लोगों को अचरज करेगी। हमने आकर देश में भिन्न-भिन्न संस्थाओं को एक चिट्ठी भेजी । हमने कहा कि आपको विदेशों से धन मिलता है। एफसीआरए कानून के तहत आपको परमिशन मिली हुई है।

आप अपने पैसों का हिसाब दीजिए। विदेशों से पैसा आता है, उसे कहां उपयोग करते हैं? इतना सा कोई रेड नहीं करनी पड़ी है, किसी इनकम टैक्स वाले को जाना नहीं पड़ा है। एक छोटी सी चिट्ठी गई थी। आप हैरान हो जाएंगे कि इस देश में 20 हज़ार से ज़्यादा संगठनों ने अपनी दुकानें बंद कर दीं, जो विदेशों से धन लेते थे। …(व्यवधान) ये 20 हज़ार संस्थाएं क्या करती थीं? सीमावर्ती गांवों से लेकर, संसद से लेकर, न्याय तंत्र और न्याय प्रक्रिया तक प्रभाव पैदा करने का काम होता था। …(व्यवधान) उन पर हाथ उठाने का काम हमने किया है। …(व्यवधान) 20 हज़ार संस्थाएं? क्या आप ये नहीं रोक सकते थे? क्यों चलने दीं? क्या आर्शीवाद थे? आपका क्या भला होता था? ये विदेशी धन लाने के रास्ते किस के लिए थे? …(व्यवधान) ये लड़ाई हम लड़ रहे हैं, इसलिए चारों तरफ से अभद्र भाषा सुनने को मिलती है, गाली-गलौज सुनने को मिलती है, गंदे आरोप सुनने को मिलते हैं। …(व्यवधान) उसका कारण यही है कि इतने लोगों को परेशानी हो रही है कि एक ईमानदार सच्ची

सरकार, देश के हित में सोचने वाली सरकार आती है, तो क्या होता है, यह इससे पता चलता है। 20 हज़ार संस्थाएं बहुत बड़ा आंकड़ा है। …(व्यवधान) अब तो मैं देख रहा हूं कि जो बहुत बड़े-बड़े नाम थे, वे ऑफिशियली हिन्दुस्तान में अपना कारोबार बंद कर के नए नाम से घुसने के लिए रास्ते खोज रहे हैं, यह हाल पैदा हो गया है। …(व्यवधान) आपने देखा होगा। मुझे याद है गुजरात में नर्मदा पर सरदार सरोवर डैम है। पंडित नेहरू जी ने उसका शिलान्यास किया था और अभी मैंने उद्घाटन किया है। …(व्यवधान) इसके पीछे विदेशी धन से खेलने वाले एन.जी.ओ. थे। किसी ने इनको नहीं रोका। 20 हज़ार संस्थाएं बंद हुई हैं। आने वाले दिनों में यह आंकड़ा बढ़ सकता है, क्योंकि हम पाई-पाई का हिसाब ले रहे हैं।

अध्यक्ष महोदया, 55 साल के सत्ता भोग ने कुछ दलों के लोगों की आदत ऐसी खराब कर दी है, वे अपने आपको ऐसा शहंशाह मानते हैं और बाकियों को ऐसा निकृष्ट मानते हैं।…(व्यवधान) वे हर व्यवस्था को निकृष्ट मानते हैं। …(व्यवधान) हर किसी का अपमान करना मानो उनके स्वाभाव में है। …(व्यवधान) हर किसी को अपमानित करना उनके स्वाभाव में है। …(व्यवधान) इसलिए मुख्य न्यायाधीश को विवाद में घेरना, पूरा माहौल बिगाड़ने का प्रयास करना, न्याय तंत्र का अपमान करना, रिज़र्व बैंक का अपमान करना, सेनाध्यक्ष का अपमान करना, चुनाव आयोग का अपमान करना, देश की सब से बड़ी जांच एजेंसी का अपमान करना, लोकतंत्र का अपमान करना - यह मैं समझता हूं सत्ता भोग के कारण आपके अंदर आई हुई विकृति है। महात्मा गांधी बहुत पहले भनक गए थे। उनको यह अंदाज हो गया था कि सारी बीमारियों की रिसीविंग केपेसिटी सब से किसी की ज़्यादा है, तो कांग्रेस की है। इसलिए महात्मा गांधी ने उसी समय कहा था कांग्रेस को बिखेर दो। कांग्रेस मुक्त भारत - यह मेरा स्लोगन नहीं है, मैं तो महात्मा गांधी जी की इच्छा पूरी कर रहा हूं। …(व्यवधान) 150 साल हो रहे हैं महात्मा गांधी जी के, श्रद्धांजलि के रूप में यह काम करना ही करना है। …(व्यवधान) कितनी ही

मिलावट कर लो, बच नहीं सकते हो। …(व्यवधान) हमारे लिए तो हमारे संस्कार अलग हैं। …(व्यवधान) हमारे लिए हम से बड़ा हमारा दल है, दल से बड़ा हमारा देश है। …(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षा जी, संवैधानिक संस्थाओं का अपमान, भ्रष्टाचार, वंशवाद - एक प्रकार से कांग्रेस के साथियों ने भी यह मिलावट कल्चर स्वीकार कर लिया है। वंशवाद के बाहर उनका एक भी साथी नहीं रह सकता है, एक भी नहीं, क्योंकि उनके लिए यह संस्कार बन गया है, यह उनकी संस्कृति बन गई है। …(व्यवधान) इसलिए, यह महा-मिलावट का खेल बड़ी आसानी से किया जा सकता है, क्योंकि सभी वंशवादी हैं। …(व्यवधान) करीब-करीब थोक में सब बेल पर हैं। …(व्यवधान)

<u>19 00hrs</u>

फिर बड़ा स्वाभाविक है। …(व्यवधान) पूर्ण बहुमत की सरकार, अगर अटल बिहारी वाजपेयी जी को भी मुझसे ज्यादा पूर्ण बहुमत मिला होता तो आज देश कहां से कहां पहुंच गया होता । हम जानते हैं और जो आज आपके पास आए हैं, वे उस समय भी हमारे पास थे और उस समय भी उन्होंने ऐसे ही धोखा किया था। …(व्यवधान) इन धोखेबाज लोगों को लेकर मिलावटी कल्चर से देश का महाविलावट-महाविलावट करते रहो। आज यहां बाबा साहेब अम्बेडकर की बात हुई। आज बाबा साहेब अम्बेडकर का उल्लेख हुआ। एक बार बाबा साहेब अम्बेडकर ने कहा था और हो सकता है कि मिलावट के रास्ते पर गए हुए कुछ लोगों को शायद बाबा साहेब अम्बेडकर में श्रद्धा हो तो काम आएगी। बाबा साहेब अम्बेडकर ने कहा था कि कांग्रेस में शामिल होना आत्महत्या करने के समान होगा । ये बाबा साहेब अम्बेडकर का वाक्य है। कांग्रेस में शामिल होना आत्महत्या के समान होगा । …(व्यवधान)

श्री रामदास अठावले :बाबा साहेब अम्बेडकर ने कहा था कि “कांग्रेस एक जलता मकान है।”…(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : कांग्रेस ने ही उनको ड्राफ्टिंग कमेटी का चेयरमैन बनाया था। क्या आपने बनाया था या मोदी जी ने बनाया था? …(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी :खड़गे जी, आपका सी.आर. कोई नहीं बिगाड़ेगा, चिंता मत कीजिए।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : सी.आर. की चिंता नहीं है, मैं जो भी जी रहा हूं, मेरा कहना है कि मेरा जो यह जीना है, यह बहुत है। मेरी उम्र साठ साल तक थी, लेकिन मैं 77 साल तक जो जी रहा हूं।…(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोदी :आपको शतायु होना है, हमारी शुभकामनाएं आपके साथ हैं।

अध्यक्ष महोदया जी, आज यहां सदन में महंगाई को लेकर भी कुछ बातें हुई हैं। हकीकतों से बिल्कुल परे, सच्चाई से परे। मैं उन सबको याद दिलाना चाहता हूं। हमारे देश में सिनेमा में दो गाने बड़े प्रसिद्ध हुए थे। एक था, “बाकी कुछ बचा तो महंगाई मार गई रे” और दूसरा गाना था महंगाई का जो पॉप्युलर हुआ था, “महंगाई डायन खाए जात है।” अब ये दोनों गीत किस कार्यकाल के हैं? पहला गाना पॉप्युलर हुआ था, जब श्रीमती इंदिरा गांधी जी प्रधान मंत्री थीं और इन्फ्लेशन 20 प्रतिशत से ज्यादा था। दूसरा गाना, रिमोट कंट्रोल वाली सरकार थी और 10 प्रतिशत से ज्यादा इन्फ्लेशन था, तब ये गाने लिखे गए हैं, तब ये गाने पॉप्युलर हुए थे। महंगाई और आपका अटूट नाता है। इस देश में जब भी कांग्रेस आई है, महंगाई हमेशा बढ़ी है। इंदिरा जी के समय 30 परसेंट से प्लस इन्फ्लेशन चला गया था। ये कारोबार आपने किया था। अब आप कल 1947 से शुरू कर रहे थे। मैं खोलकर रखूंगा तो पता नहीं क्या-क्या निकलेगा? इसलिए बीते 4.5 वर्ष में महंगाई की दर को 55 महीने में सेवा भाव से चलने वाली सरकार ने 4 प्रतिशत की मर्यादा में बांधकर रखा है। मध्यम वर्गीय समाज के लिए बहुत सारी मदद करने के काम हमारी सरकार लगातार करती रही है, क्योंकि देश में जिस प्रकार से आर्थिक गतिविधि आई है, मध्यम वर्ग की आशाएं, अपेक्षा बढ़ना बहुत स्वाभाविक है। मैं मानता हूं कि किसी भी देश की प्रगति के विकास के लिए बहुत अनिवार्य अंग हैं, जो आज देश 55 महीने में अनुभव कर रहा है।

नई-नई एस्पिरेशंस, नई-नई अपेक्षाएं, नई-नई आकांक्षाएं विकास की सबसे बड़ी निशानी होती है, जो आज देश में नजर आ रहा है। कुछ लोगों को आशाएं-अपेक्षाएं बोझ लग रही हैं, मैं इसको गौरव से देखता हूं, क्योंकि वे दौड़ने की ताकत देती हैं, न्याय करने की प्रेरणा देती हैं।

जीएसटी के बाद जरूरी सामान को टैक्स के दायरे से बाहर करने का काम हमने किया है। आप याद कीजिए, दूध पर भी आप टैक्स लेते थे, न जाने कैसी-कैसी चीज पर टैक्स लेते थे। आपको तो बोलने का हक ही नहीं है। एवरेज टैक्स जीएसटी से पहले 30 प्रतिशत से ज्यादा हुआ करता था । आप कैसी बातें बताते हैं? जीएसटी काउंसिल निर्णय करती है, जिसमें आपके दल के लोग भी होते हैं, आपके दल के मुख्यमंत्री और आपकी सरकार के लोग भी होते हैं। आज 99 परसेंट सामान या उससे ज्यादा सामान पर टैक्स 18 परसेंट या उससे कम आया है। इस बजट में भी इंकम टैक्स के तहत पांच लाख रुपये पर राहत देने का काम हमने किया है। यह मांग हमारे समय में आयी है, ऐसा नहीं है। जब इकोनॉमिस्ट प्रधान मंत्री थे, तब भी आती थी, वर्ष 1992 में भी ऐसी मांग आती थी, लेकिन इतने सालों तक आपने कभी ध्यान नहीं दिया। हमने इसकी चिंता की है।

एजुकेशन लोन, हमारा मिडिल क्लास का परिवार एजुकेशन लोन लेता है। उस पर ब्याज 15 प्रतिशत से घटाकर 11 प्रतिशत हमने किया है। उसके कारण अगर एक नौजवान विद्यार्थी दस लाख रुपये का लोन लेता है तो आज उसको लोन भरते-भरते सवा लाख रुपये की बचत होती है। उसी प्रकार से आवास में मध्यम वर्गीय परिवार बैंक से अगर लोन लेता है तो बैंक में पैसा जमा करते-करते उसे 5 से 6 लाख रुपये तक की बचत होती है। यह काम हमने करके दिया है।

इसी प्रकार से एलईडी बल्ब है। मैं हैरान हूं कि क्या कारण था कि यूपीए की सरकार के समय में एलईडी बल्ब 300, 400 और 450 रुपये में बिकता था? ऐसा क्या कारण है कि हमारे आने के बाद वह 60-70 रुपये पर आ गया है? देश में करोड़ों एलईडी बल्ब बिक गए हैं। कितने करोड़ों रुपये गरीब

और मध्यम वर्गीय परिवारों का बचा है, आप इसका अंदाजा लगा सकते हैं। इस एलईडी बल्ब के कारण देश में 50 हजार करोड़ रुपये की बिजली का बिल लोगों का कम हुआ है। 50 हजार करोड़ रुपये प्रति वर्ष मध्यम वर्गीय परिवारों की जेब में बचा है। यह बहुत बड़ा काम एक एलईडी बल्ब के माध्यम से हुआ है। अगर मैं 50 हजार करोड़ रुपये का पैकेज घोषित करता तो मीडिया में चौबीसों घंटे चर्चा चलती, हर अखबार की हेडलाइन होती। यह 50 हजार करोड़ रुपये बचाकर के देश के मध्यम वर्गीय परिवारों की मदद करने का काम हमारी सरकार ने किया है।

दिल की बीमारी के स्टेंट कितने महंगे थे, हमने सस्ते कर दिए । नी-इम्प्लांट का काम कितना सस्ता हो गया है, यह हमने करके दिखाया । हम मुफ्त में डायलिसिस की सुविधा डिस्ट्रिक्ट लेवल तक लेकर गए हैं। पहले गरीब व्यक्ति को डायलिसिस के लिए दो-दो, तीन-तीन हजार रुपये खर्च करने पड़ते थे। आज उसको मुफ्त में यह सुविधा देने का काम हमने किया है। पांच हजार से ज्यादा जनऔषधि केन्द्र हमने शुरू किए हैं। उन जनऔषधि केन्द्रों का परिणाम है कि आज गरीब परिवार, जिसमें संयुक्त परिवार हों, 60 से ऊपर की उम्र के लोग साथ में रहते हों तो उनकी दवा खरीदने काम होता रहता है। आज सौ रुपये की जेनरिक दवाई 30 रुपये में मिलने लगी है। यह मध्यम वर्ग को सबसे बड़ा लाभ देने का काम हमने किया है। इसी प्रकार से गरीब के इलाज की हमने चिंता की है। मैं हैरान हूं कि आयुष्मान भारत में मोदी की चिट्ठी को लेकर लोग परेशान हैं। देश का प्रधान मंत्री चिट्ठी लिखता है तो एक प्रकार से बहुत बड़ी जिम्मेवारी लेता है, बहुत बड़ा कमिटमेंट देता है और सामान्य मानवी को विश्वास देता है कि आप चिंता मत कीजिए, हम आपके साथ हैं। आज इस सदन को सचमुच में खुशी होनी चाहिए कि इस देश के गरीब, जो अपनी गरीबी के कारण मौत का इंतजार करते थे, लेकिन अस्पताल की राह जाने की हिम्मत नहीं करते थे और सामान्य जड़ी-बूटी लेकर गुजारा कर लेते थे, गम्भीर से गम्भीर बीमारी में भी दिन काटते थे और परिवार के लोगों की स्थिति भी ऐसी होती थी कि इनके लिए क्या किया जाए? दो-दो, तीन-तीन, चार-चार साल से गम्भीर बीमारी में पड़े हुए लोग, अभी सौ दिन से कुछ

ज्यादा दिन ही आयुष्मान भारत योजना को हुए हैं, अब तक करीब-करीब 11 लाख गरीबों ने इसका ऑलरेडी फायदा उठाया है।

गंभीर प्रकार की बीमारियों में लाभ मिला है। प्रतिदिन 15 हजार से ज्यादा गरीब इस 'आयुष्मान भारत' योजना के तहत फायदा उठा रहे हैं। यह हम सबका दायित्व है। मैंने देखा है कि प्रधान मंत्री राहत कोष के लिए हमारे सभी एम.पी. चिट्ठी लिखते हैं कि हमारे इलाके में कैंसर की बीमारी है, फलानी बीमारी है, प्रधान मंत्री राहत कोष से पैसे दीजिए और प्रधान मंत्री राहत कोष से हम इस काम को लगातार करते रहते हैं, मेरे पहले के प्रधान मंत्रियों ने भी किया है। लेकिन इस 'आयुष्मान भारत' के बाद आज किसी एमपी को इस प्रकार की चिट्ठी लिखने की नौबत नहीं आ रही है। उसको गोल्ड कार्ड मिल गया, उसका काम तुरंत हो जाता है। प्रधान मंत्री राहत कोष से तो कुछ सीमा तक पैसे दिए जाते थे, इसमें पूरा का पूरा खर्चा दिया जा रहा है। हर एम.पी. प्रधान मंत्री राहत कोष से मिलने वाले पैसों के संबंध में मुझसे हमेशा मिलते थे और संतोष व्यक्त करते थे कि मेरे इलाके में इतने लोगों का फायदा हो गया है। पहले सप्ताह में हो गया है, तीसरे सप्ताह में हो गया है। मैं उनको भी चिट्ठी लिखता हूं। प्रधान मंत्री राहत कोष में से जिनको भी पैसा मिलता है, मैं चिट्ठी लिखता हूं कि पक्का होना चाहिए कि वह सचमुच में बीमार था या नहीं था।

मैं जब गुजरात में था, तब हमने एक प्रयोग किया था। सर्किट हाउस में लोग रहते थे। नेता लोग हैं, तो उन्हें कन्सेशन से सर्किट हाउस मिल जाता है। हमारे सर्किट हाउस के एक मैनेजर थे, जितने लोग रहते थे, उनको फिर चिट्ठी लिखते थे कि आप और आपकी पत्नी फलानी तारीख को आए थे, आपको कोई असुविधा तो नहीं हुई होगी। ऐसी स्थिति हो गई थी कि लोगों ने आना ही बंद कर दिया।...(व्यवधान) मैं चिट्ठी लिखता था।...(व्यवधान) कि आपको इस बीमारी के नाते मैंने इतना पैसा भेजा है, आपका स्वास्थ्य ठीक रहा होगा। उसको फिर आधार से भी जोड़ दिया, एक नये पैसे का लीकेज़ नहीं, 'दलाल' नहीं। लेकिन 'आयुष्मान भारत' से मैं सभी एमपी से आग्रह करता हूं कि आप

चुनाव में जा रहे हैं, जितने गरीबों को आप अपने क्षेत्रों में 'आयुष्मान भारत' का लाभ दिला सकते हैं, दिलाइए। मैं आपको स्वस्थ स्पर्धा के लिए निमंत्रित करता हूं। गरीबों का भला होगा, चुनाव तो आएंगे और जाएंगे। अभी दो-तीन महीने हैं, कुछ काम कर लीजिए। आपके लिए मौका है, इसलिए मैं आपको बताता हूं।…(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया जी, मैं एक विषय को जरा विस्तार से बताना चाहता हूं। विस्तार से बताने की बात अब शुरू कर रहा हूं।…(व्यवधान) संविधान संशोधन करके हमने देश के गरीब युवाओं को उनके सपनों को साकार करने के लिए एक सुविधा तो की है, लेकिन सामाजिक तनाव को जितना डाल्यूट कर सकते हैं, उस रास्ते को हमने चुना है। एस.सी, एस.टी. और ओ.बी.सी., उस व्यवस्था को जरा भी हाथ लगाए बिना 10 प्रतिशत गरीबों को आरक्षण दिया है। यह विषय कोई हमारे आने के बाद आया है, ऐसा नहीं है। यह पहले से था। हमने हिम्मत दिखाई है और मैं इस सदन का आभारी हूं, सबका आभारी हूं कि सबने सर्वसम्मति से इस पर साथ दिया है। मैं इसके लिए आज मौका लेता हूं और आप सभी का आभार व्यक्त करता हूं। हरेक का आभार व्यक्त करता हूं, लेकिन इसके साथ-साथ बाकी के साथ अन्याय न हो, इसलिए हमने शिक्षा के क्षेत्र में अनुपात के अंदर सीटें बढ़ाने का भी निर्णय कर लिया है, ताकि हमारी जो प्रगति की यात्रा है, उसको कोई तकलीफ न हो । 55 साल के शासन के बावजूद…(व्यवधान) अब मैं जरा सत्ता भोग का हाल क्या है।…(व्यवधान) जॉब के संबंध में 55 सालों तक कोई स्टैण्डर्ड व्यवस्था विकसित ही नहीं हुई थी। पुरानी सरकारों के लिए वहकोई एजेंडा ही नहीं था कि रोजगार को ध्यान में रखकर व्यवस्थाएं विकसित करनी चाहिए। रोजगार के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। इसके लिए सत्ता भोग में डूबे हुए लोगों की जिम्मेवारी ज्यादा है। हमने आकर कोशिश की है। अगर 100 सेक्टरों में नई नौकरियां बन रही हैं, तो सिर्फ उसमें 7-8 सेक्टर को गिनकर एक मोटा-मोटा अनुमान लगाया है। आज जो पद्धति है कि 100 सेक्टर में रोजगार है, तो 7 या 8 सेक्टर में टोकन सर्वे होता है और उसके हिसाब से अनुमान लगाया जाता है।

अब आज वक्त बदल चुका है, सारे पैरामीटर्स बदल चुके हैं, रोजगार के प्रकार बदल चुके हैं। इसलिए मैं आज इस सदन को सच्चाई बताना चाहता हूं और डंके की चोट पर बताना चाहता हूं, हकीकतों के आधार पर बताना चाहता हूं और मैं देशवासी जो टी.वी. पर देखते हैं, उनको विशेष रूप से कहता हूं कि मेरे आगे के भाषण के बजाय इसको गंभीरता से सुनिये, ताकि जिस प्रकार से सत्य को कहीं जगह नहीं, ऐसे सत्ताभोगी लोग जो बातें कर रहे हैं, उनको जरा सीधा-सीधा जवाब देश की जनता दे सकती है।

अब देखिये, देश में असंगठित क्षेत्र करीब-करीब 85 से 90 परसैंट नौकरियां देता है। जबकि संगठित क्षेत्र सिर्फ 10 से 15 परसैंट ही जॉब देता है। इस सत्य को स्वीकार करना होगा। अनऑर्गेनाइज्ड सैक्टर में 80 से 90 परसैंट है, जब कि आर्गेनाइज्ड सैक्टर में ऑनली 10 से 15 परसैंट है। जो सैक्टर नौकरियों का सिर्फ 10 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करता है, मैं उसके कुछ आंकड़े देना चाहता हूं। मैं जरा वह 10 परसैंट वाला हिसाब देना चाहता हूं। 90 परसैंट वाला हिसाब बाद में देखते हैं। सितम्बर, 2017 से लेकर नवम्बर, 2018 तक यानी करीब-करीब 15 महीने में लगभग 1 करोड़ 80 लाख लोगों ने पहली बार प्रोविडेंट फंड का पैसा कटाना शुरू किया। क्या यह बिना रोजगार होता है? इनमें से 64 परसैंट लोग हैं, जिनकी उम्र 28 साल से कम है। इसलिए खड़गे जी आज जो सुबह आर्ग्यूमैंट दे रहे थे, उसका कोई लॉजिक नहीं है। 28 साल से कम उम्र का व्यक्ति मतलब नया जॉब प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है।

इसके अलावा एक और तथ्य मैं आपको देना चाहता हूं। हमारे देश में मार्च, 2014 में करीब-करीब 65 लाख लोगों को नेशनल पेंशन सिस्टम (एन.पी.एस.) में रजिस्टर किया गया था । पिछले साल अक्टूबर में यह संख्या बढ़कर 1 करोड़ 20 लाख हो गई। क्या यह भी बिना नौकरी के हुआ होगा, क्या कोई ऐसे ही कर देता होगा? …(व्यवधान)

इसलिए एक और आंकड़ा मैं देना चाहता हूं। हर साल इनकम टैक्स रिटर्न भरते समय नॉन-कॉरपोरेट टैक्स पेयर्स जो अपनी आय घोषित करते हैं, उन्हें खुद सैलरी नहीं मिलती है, लेकिन ये लोग अपने यहां जिन लोगों को नियुक्त करते हैं, उनको सैलरी देते हैं। पिछले चार वर्षों में देश में ऐसे लगभग 6 लाख 35 हजार नये प्रोफेशनल्स जुड़े हैं। क्या आपको लगता है कि एक डाक्टर अपना क्लिनिक या नर्सिंग होम खोलता है तो क्या किसी और को काम नहीं देता होगा? कोई चार्टर्ड एकाउंटेंट अपना दफ्तर खोलता है तो क्या वह किसी को रोजगार नहीं देता होगा? क्या वह एक, दो या तीन लोगों का स्टाफ नहीं रखता होगा? 6 लाख 35 हजार प्रोफेशनल्स ने जिन लोगों को काम पर रखा होगा। मैं फिर कहूंगा कि यह फॉर्मल सैक्टर का आंकड़ा है, जो सिर्फ 10 प्रतिशत प्रतिनिधित्व करता है, उसके आधार पर मैंने बताया है।

अब मैं आपको जरा इनफॉर्मल सैक्टर का आंकड़ा देता हूं। इनफॉर्मल सैक्टर में ट्रांसपोर्ट सैक्टर, जो असंगठित कामगार होते हैं, ट्रांसपोर्ट सैक्टर में सबसे ज्यादा रोजगार का अवसर होता है। बीते चार वर्षों में …(व्यवधान)

प्रो. सौगत राय : पानी पीजिए सर।

श्री नरेन्द्र मोदी: थैंक यू, थैंक यू दादा,थैंक यू दादा। …(व्यवधान) सदन में आप जैसे लोग रहने चाहिए, ताकि चिंता रहती है। बीते चार वर्षों में करीब 36 लाख बड़े ट्रक या कमर्शियल व्हीकल्स बिके हैं, करीब डेढ़ करोड़ पैसेंजर व्हीकल्स बिके हैं।

27 लाख से ज़्यादा नए ऑटों की बिक्री हुई हैं। ये सारी गाड़ियाँ, जिन्होंने भी खरीदी हैं क्या उन्होंने पार्किंग करके रखी है, शोभा के लिए रखी है क्या? उनको चलाने वाला नहीं होगा क्या? उनकी कोई सर्विसिंग नहीं होती होगी क्या? क्या उनके मेन्टीनेंस के लिए कोई मैकेनिज्म काम नहीं करता होगा? एक अनुमान है कि ट्रांसपोर्ट सेक्टर में ही देश में बीते साढ़े चार वर्षों में करीब-करीब सवा करोड़ लोगों को नए अवसर मिले होंगे।

इसी तरह अगर मैं होटल इंडस्ट्रीज की बात करूँ तो अप्रूव्ड होटलों की संख्या में 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। क्या ये होटल खाली पड़े हैं? क्या वे किसी को जॉब नहीं दे रहे हैं? अनुमान यह भी हो सकता है कि टूरिज्म सेक्टर में करीब-करीब डेढ़ करोड़ नई नौकरियों का निर्माण हुआ है। देश में टैक्सी एग्रीगेटर सर्विस का इतना विस्तार हो रहा है, लेकिन विपक्ष के मेरे साथियों को लगता है कि तमाम ऐप बेस कम्पनियाँ, यह कर रही है। यह ऐप बेस कर रही है, क्या ड्राइवरलैस कार चल रही है? ऐप बेस हो रहा है तो क्या ड्राइवरलैस कार है? उसमें भी कोई न कोई गाड़ी चलाता है। उसमें भी कोई न कोई रोज़गार पाता है।…(व्यवधान)

मुद्रा योजना के तहत पहली बार लोन पाने वाले लोगों की संख्या सवा चार करोड़ से ज़्यादा है। फर्स्ट टाइमर यानी इन सवा चार करोड़ लोगों ने अपना काम शुरू किया है, लेकिन ये लोग जॉब डेटा के अंदर नहीं होते हैं।…(व्यवधान)

इसी तरह हमारी सरकार के दौरान दो लाख से ज़्यादा नए कॉमन सर्विस सेंटर देश के ग्रामीण इलाकों में खोले गए हैं। क्या इसकी वजह से भी किसी को नौकरी नहीं मिली होगी? एक जमाना था, एसटीडी का बूथ लगता था और पार्लियामेंट में उसको रोज़गार के आँकड़ों के रूप में बताया जाता था। आज दो लाख कॉमन सर्विस सेंटर करीब-करीब 18-20 घंटे काम करते हैं। एक-एक कॉमन सर्विस सेंटर में 3-3, 5-5 नौजवान काम करने लगे हैं और कॉमन सर्विस सेवाएँ दे रही हैं।

उसी प्रकार से देश में दुगुनी गति से हाइवे बन रहे हैं। नए एयरपोर्ट बन रहे हैं, रेलवे स्टेशनों का आधुनिकीकरण हो रहा है। करोड़ों-करोड़ों नए घर बन रहे हैं। क्या यह भी किसी को रोज़गार के अवसर नहीं देते हैं? हमारे देश का नौजवान आज अपने दम पर खड़ा हुआ है। स्किल इंडिया, स्टार्ट अप इंडिया, स्टैंड अप इंडिया, मुद्रा योजना इत्यादि। ये स्वरोज़गार के ऐसे मजबूत हमारे इनिशिएटिव्स हैं, जो देश में…(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया, हमारे देश का युवा, हमारे देश के भविष्य के साथ सीधे-सीधे जुड़ा हुआ है, लेकिन इसी के साथ-साथ हमारे देश के किसानों की चिंता भी जिस प्रकार से की गई है, ज़रा बजट देख लीजिए, आपके समय में कितना बजट खर्च होता था और हमारे समय में कितना खर्च होता है। आप एमएसपी में कितना पैसा लगाते थे, हम एमएसपी में कितना लगाते हैं। आप देख लीजिए, जहाँ आपकी सरकारें थीं, एमएसपी में कितनी खरीदी करती थी और आज भारतीय जनता पार्टी की सरकारें एमएसपी में कितनी खरीदी करती हैं, ज़रा आँकड़े देखोगे तो आपको लगेगा कि किसानों के लिए काम कैसे होता है। 55 साल का सत्ता भोग 55 महीने का सेवा भाव, यह आपको किसानों की सेवा में भी बिल्कुल नज़र आएगा। आपने दस साल में चुनाव को ध्यान में रखते हुए एक कर्ज माफी का चक्र बना लिया है। यह आपने अपना खेल शुरू किया है। दस साल हवा बनाते चलो और आँख में धूल झोंको। फिर अपना वोट बटोरेने की कोशिश करो।…(व्यवधान) यह आपकी 10 वार्षिक योजना है। वर्ष 2009 का चुनाव जीतने के लिए आपने कर्ज माफी की घोषणा की । किसानों का कर्ज 6 लाख करोड़ रुपया था। इतना बड़ा उन्होंने ताम-झाम, होहल्ला किया और उनकी इको-सिटी में कोई उनको सवाल तो पूछता नहीं है। वह भी गाजे-बाजे बजाने लग जाते हैं।

6 लाख करोड़ रुपये का कर्ज था और आपने माफ कितना किया, 52,000 करोड़ रुपये।…(व्यवधान) यह क्या है और यह किसको जाता है? बैंक में जो बड़े लोग पैसे ले जाते हैं, यह उनको जाता है। जो गरीब किसान है, उस बेचारे को तो अगर कोई जरूरत हो तो उसे साहूकार के पास जाना पड़ता है। वह ब्याज देने में मर जाता है, लेकिन आपको उसकी परवाह नहीं थी। उस समय जो सी. एण्ड ए.जी. की रिपोर्ट है, वह इसी सदन में रखी गयी थी । लेकिन, उस समय इतना बड़े-बड़े करप्शन का कारोबार चलता था कि बहुत-सी चीजों पर ध्यान ही नहीं जाता था। 2-जी चलता था, कोयला चलता था, न जाने क्या-क्या चलता था और कैसे-कैसे लोग चलाते थे? किस-किस समय चलाते थे? लेकिन, उस समय की सी. एण्ड ए.जी. रिपोर्ट में है कि उस 52,000 करोड़ रुपये के लोन

में भी 35 लाख लोग ऐसे पाए गए, जो इसके हक़दार नहीं थे, लेकिन वे पैसे ले रहे थे।…(व्यवधान) इसमें भी 'दलाली', इसमें भी खेल! इतना ही नहीं, जब हम इस योजना को लाए हैं तो हमारा साफ मत है कि हम कैसे भला करेंगे। किसान के लिए हमारी सोच क्या रही है? हम भी कर्ज माफी के रास्ते पर जा सकते थे। लेकिन, एम्पावरमेंट-ऑफ-किसान, उसकी समस्या का कायम समाधान, 99 सिंचाई की योजनाएं थीं। आज आपको 'प्रधानमंत्री सिंचाई योजना' से तक़लीफ हो रही थी। 99 सिंचाई योजनाएं थीं। जैसा मैंने कहा कि हमारे यहां नेहरू जी ने एक पत्थर डाला था और मैंने जाकर उसका उद्घाटन किया। 99 ऐसी योजनाएं, जो लटकी पड़ी थीं, हजारों करोड़ रुपये खर्च करके उन योजनाओं को पूरा करने का काम हमने किया है।…(व्यवधान)

हमने नए मेगा फूड पार्क, नए कोल्ड स्टोरेज पर बल दिया है। 22,000 ग्रामीण हाट बनाने की दिशा में काम बहुत तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमने e-NAM के माध्यम से किसानों को अपने माल बेचने की ऑनलाइन व्यवस्था मुहैया की है, ताकि किसानों को पूरा दाम मिल सके।…(व्यवधान)

माननीय अध्यक्षा जी, हमने इस योजना में, किसानों के लिए इस बार के बजट में 6,000 रुपये वार्षिक रूप से देना तय किया है। यह निर्णय आने वाले समय में दूरगामी परिणाम देने वाला है। 12 करोड़ किसान इसके लाभार्थी बनेंगे। आपकी अब तक की योजनाएं एक करोड़, डेढ़ करोड़, दो करोड़ किसानों तक ही सीमित थीं। वे ऊपरी सतह के लोगों के लिए थीं। एक एकड़, दो एकड़ भूमि वाले किसानों तक वे कभी पहुंची नहीं थीं। पर, यह योजना ऐसी है, जो एक एकड़, दो एकड़ वाले छोटे किसानों के लिए है। इस देश के 85% किसान ऐसे हैं। इन्हें यह लाभ मिलने वाला है और करीब 12 करोड़ किसानों को इसका सीधा लाभ उनके बैंक खातों में जाएगा और उसमें कोई दलाल नहीं होगा। मैं हैरान हूं। कुछ राज्य बड़ा सीना तानकर कह रहे हैं कि हम मोदी की किसान योजना को नहीं लेंगे। अरे, जरा वहां के किसानों से तो पूछो कि 6,000 रुपये आने हैं, उसे यह लेना है या नहीं। आपको तो एक रुपया देना नहीं है। यह तो सीधा जाने वाला है। लेकिन, राजनीति में कुछ लोगों को ऐसा 'पागलपन' हो

जाता है कि वे घोषणा कर देते हैं कि इस योजना का लाभ नहीं लेना। अरे, अपने किसानों की चिंता करो। हम 'आयुष्मान योजना' नहीं लेंगे। अरे, अपने यहां के गरीबों की चिंता कीजिए। यह राजनीति चलती रहेगी, यह खेल करना बंद करो और अपने गरीबों, किसानों की चिंता करो।…(व्यवधान)

साहूकारों से लोन लेने वाले छोटे किसानों की कोई कर्जमाफी नहीं होती है।…(व्यवधान) मैं जरा कर्नाटक का उदाहरण देना चाहता हूं।…(व्यवधान) आप कर्नाटक से हैं और किसान नेता स्वयं यहां बैठे हैं। हमारे पूर्व प्रधान मंत्री आदरणीय देवगौड़ा जी अपने आपको एक किसान-पुत्र के रूप में लोगों को हमेशा बताते रहते हैं।…(व्यवधान) आपकी सरकार, आपने बड़ी घोषणाएं की थीं और हमें कहते हैं कि मोदी ने घोषणाएं करके वोट ले लिया । आपने कर्नाटक में किसानों का कर्ज माफ करने को कहा था। इसके लाभार्थी 43 लाख हैं। According to Government's record of Karnataka, 43 लाख लोग इसके हितकारी हैं और अभी तक सिर्फ 60 हजार लोगों को लाभ मिला है।…(व्यवधान) यह मैं आपके सरकार की बात बताता हूं। 43 लाख लोगों में से सिर्फ 60 हजार का किया और आप दुनिया को कर्ज माफी के नाम पर बता रहे हैं - 'दस दिनों में कर्ज माफी, दस दिनों में कर्ज माफी।' राजस्थान और मध्य प्रदेश से होकर आइए। वहां अभी तो कागज पर चिट्ठियां नहीं बन पा रही हैं। आप बातें बड़ी-बड़ी करते थे।

मैं बताता हूं कि आप अपने दस वर्ष के खेल में एक बार 50-60 हजार करोड़ रुपये माफ करते थे। आप दस साल में एक बार करते थे और ऊपर के जो दो-तीन करोड़ किसान होते हैं, वही उनके हितकारी होते थे।सभी के पास लाभ पहुंचता तो था नहीं,लेकिन हमारी योजना प्रतिवर्ष है। अगर मैं दस साल का हिसाब लगाऊं, तो किसानों के खाते में साढ़े सात लाख करोड़ रुपये जमा हो गए हैं। कहां 50-52 हजार करोड़ रुपये का खेल और कहां साढ़े सात लाख करोड़ रुपये देश के किसानों के हाथ में जाएंगे। इतना ही नहीं, बल्कि हमने इस बजट में 'राष्ट्रीय कामधेनु आयोग', के तहत मछली पालन करने वाले किसानों के लिए भी विशेष व्यवस्था की है और पशुपालन करने वालों के लिए भी व्यवस्था

की है। जिन किसानों को किसान क्रेडिट कार्ड काबैनिफिट मिलता था, वह बेनिफिट पशुपालक और मछली पालन करने वालों को भी मिलने वाला है। अब इसका फायदा होने वाला है।हमने उन लोगों के विषय में सोचा। एक संवेदनशील सरकार कैसे काम कर सकती है? आप कहेंगे कि हमारे समय में भी था, हमारे समय में भी था। भाई, सब कुछ आपके समय में था, लेकिन मेरी काफी ताकत तो आपके किए हुए चीजों को पूरा करने में ही जा रही है, क्योंकि आपने ऐसे-ऐसे कामों में हाथ लगाकर छोड़ दिया है कि जिसको अब हमें पूरा करना पड़ रहा है। लेकिन मैं उसको भी खुशी-खुशी पूरा करूंगा।

अब मुझे टीकाकरण के बारे में बताइए। यह मोदी के आने के बाद आया है क्या? टीकाकरण पहले भी था, लेकिन टीकाकरण होना चाहिए था। उस बच्चे तथा माँ को उसका लाभ मिलना चाहिए था, लेकिन वह काम नहीं होता था। हमारे गरीब, आदिवासी, दलित, पीड़ित, शोषित, वंचित छूट जाते थे। हमने 'मिशन इन्द्रधनुष' चलाया, आज हमने टीकाकरण का दायरा चौड़ा कर दिया और इसको सफलतापूर्वक आगे बढ़ाया है। टीकाकरण आपके जमाने में भी था, लेकिन वह टीका किसी के टीके के लिए रह जाता था। वह टीका गरीब के घर तक नहीं पहुंचता था। इस काम को हमने करने का काम किया है।

बीच में पढ़ाई छोड़ने वाले लोगों के लिए हमने स्किल डेवलपमेन्ट का काम, स्वरोजगार का काम तथा उसके लिए कौशल विकास का एक बड़ा अभियान चलाया है। हमने 'स्किल इंडिया अभियान' के तहत लाखों युवाओं को प्रशिक्षित किया है। 'प्रधानमंत्री श्रमयोगी मानधन योजना', कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों की कई वर्षों से अन-ऑर्गेनाइज्ड लेबर के लिए मांग रहती थी। 40-42 करोड़ अन-ऑर्गनाइज्ड लेबर हैं। पहली बार हमने उनके लिए हाथ लगाया और तीन हजार रुपये की पेंशन की व्यवस्था अन-ऑर्गेनाइज्ड लेबर के लिए लेकर आये। मैं मानता हूं कि हिन्दुस्तान की कम्युनिस्ट पार्टी जो सोती रही, वह नहीं कर पायी। लेकिन, वह काम करने का काम हमने किया है। हमारे देश में मछुआरों की एक मांग रहती थी कि हमारे लिए एक अलग मिनिस्ट्री होनी चाहिए। हमारी

सरकार ने इस बार बजट में कहा है। हमने मछुआरों के लिए अलग मंत्रालय की व्यवस्था करने के लिए कहा है।

उसी प्रकार से देश की आर्थिक गतिविधि में ट्रेडर्स का रोल है, लेकिन उनकी चिंता करने वाला कोई मालिक नहीं था। हमारा जो डिपार्टमेन्ट है, हमारी सरकार ने डी.आई.पी.पी. को बदलकर डिपार्टमेन्ट फॉर प्रमोशन ऑफ इन्डस्ट्री इन्टरनल ट्रेड के साथ जोड़ दिया है, ताकि ट्रेडर्स की देखभाल करने वाला भारत सरकार में भी एक विभाग होना चाहिए।

घुमंतू समुदाय, ये समुदाय कोई मेरे आने के बाद घुमंतू नहीं हुए, बल्कि सदियों से ये समुदाय हैं। आप तो गरीबों के लिए नारे लगाते थे, लेकिन घुमंतू समुदाय के लिए, जो सांप-सपेरे वाले लोग हैं, आप किसी विदेशी मेहमान को दिखाने लिए सपेरे वालों को बैठा देते थे । लेकिन, आपको उनकी चिंता करने की फुर्सत नहीं थी । हमने पहली बार घुमंतू समुदाय के वेलफेयर के लिए बोर्ड बनाने का निर्णय किया है, ताकि योजनाओं का लाभ समाज के उस वर्ग को भी मिले। मेरा अनुभव है और जब मैं गुजरात में था, तो मैं घुमंतू जाति के लोगों के मकान के लिए काम कर रहा था। मेरी इच्छा थी कि उनके बच्चे भी पढ़ें। लेकिन वे कह रहे थे कि साहब हमारा तो घर ही नहीं है, हम रहेंगे कहां, हम स्कूलों में क्या जाएंगे। मैंने उनको घर दिया, इसलिए आज मैं गर्व से कहता हूं कि आज उनके बच्चें कम्प्यूटर चला रहे हैं और बड़े शान से जीवन जी रहे हैं। अगर इन समाजों में शक्ति है तो हम उन समाजों की भलाई के लिए काम करें और इसे हम कर सकते हैं।

अध्यक्ष महोदया जी, विदेश के संबंध में हमारी सुषमा जी कई बार कई बातें कह चुकी हैं, इसलिए मैं उसके विस्तार में नहीं जाता हूं, लेकिन यह एक बात नहीं है। यह निश्चित है कि आज विश्व मंच पर भारत की बात सुनी जाती है। इस विषय में भारत क्या सोचेगा, आज यह दुनिया को पहले सोचना पड़ता है। आज जब विश्व में कोई निर्णय होता है तो निर्णय के पहले, आप पेरिस एग्रीमेन्ट देख

लीजिए, पेरिस एग्रीमेन्ट के फाइनल होने से पहले लगातार दुनिया की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ टेलीफोन पर भारत से बात करती थी कि यह शब्द रखें या न रखें।

यानी आज भारत ने अपनी जगह बना ली है। फिलीस्तीन और इजरायल के बीच में तनाव होगा, लेकिन फिलीस्तीन और इजरायल दोनों हमारे दोस्त हो सकते हैं। सऊदी अरब और ईरान के बीच में तनाव होगा, लेकिन सऊदी अरब और ईरान दोनों हमारे दोस्त हो सकते हैं।

हमारा विदेश में रहने वाला जो भारतीय समुदाय है, हमने कभी उसकी अहमियत नहीं मानी। मुझे खुशी है कि मेरे प्रयत्नों के बाद सभी राजनीतिक दलों की भी विदेश में रहने वाले भारतीयों की तरफ नजर गई है और मैं इसको अच्छा मानता हूं। विदेश में रहने वाले भारतीय हमारे देश की बहुत बड़ी ताकत हैं। हमने इसको पहचाना है और आज इसका अनुभव हम कर रहे हैं। हर क्षेत्र में वे हमारी बात को पहुंचा रहे हैं। मुझे खुशी है कि अभी जो प्रवासी भारतीय दिवस बनारस में हुआ, वह अब तक के प्रवासी भारतीय दिवसों में सबसे ज्यादा प्रतिनिधित्व वाला था।

यह खुशी की बात है कि कुंभ को विश्व ने हैरिटेज में रूप में स्वीकार किया है, लेकिन हम ऐसी मानसिक बीमारी में फंस गए थे कि कुंभ की बात आए, तो भागते थे कि कहीं साम्प्रदायिकता का दाग न लग जाए। लेकिन आज दुनिया के सभी देशों के प्रतिनिधि कुंभ के मेले में आ रहे हैं। दुनिया की एंबेसी के सारे लोग कुंभ में गए और अपने देश का झंडा गाड़ कर आए। यह भारत की ताकत है, भारत की साफ्ट पॉवर है। इसको भी हमने पहले नजरअंदाज किया। अब हम उन चीजों पर भी बल दे रहे हैं, इसलिए उस दिशा में भी हम सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं।

मेरे लिए खुशी की बात है कि हमने जितने भी विचार रखे होंगे, आलोचना की होगी, तथ्यों के अभाव के साथ भी बोल दिए होंगे, रिकार्ड पर भी चला जाएगा, लेकिन अध्यक्ष महोदया जी, मैं आज इस सदन को आपके माध्यम से विश्वास दिलाना चाहता हूं कि 2014 में जिस मंजिल को लेकर हम

निकले हैं, देश के सपनों को पूरा करने के लिए हमने जो ठानी है, जिसके लिए दिन-रात हम मेहनत कर रहे हैं, देश जिन बीमारियों में फंसा हुआ है, इनसे बाहर निकालने का काम, देश जिन सपनों को लेकर चल रहा है, इन सपनों को लेकर योजनापूर्वक आगे बढ़ने का प्रयास, देश के संसाधनों का ऑप्टमिम यूटिलाइजेशन, पल-पल देश के विकास के लिए काम आए, पाई-पाई देश की भलाई के लिए काम आए, इसके लिए हम लगातार लड़े हैं। हम करते रहे हैं, हम करते रहेंगे और मैं देशवासियों को विश्वास दिलाता हूं। मैंने 2018 में अविश्वास के प्रस्ताव के समय भी, 2018 में अविश्वास के प्रस्ताव के बाद मैंने देखा कि मेरी आवाज, मेरा गला घोंटने का भरपूर प्रयास किया गया था। डेढ़-पौने दो घंटे तक नारेबाजी के बीच में भी, यह ईश्वर की कृपा थी कि मैंने अपनी बात देश और दुनिया के सामने रखी। उस समय मैंने आपको एक शुभकामना दी थी, वह शुभकामना मैं आज फिर देना चाहता हूं कि आप इतनी तैयारी करो, इतनी तैयारी करो कि 2023 में फिर से आपको अविश्वास प्रस्ताव लाने का मौका मिले। …(व्यवधान) यह समर्पण भाव है। अहंकार का परिणाम है, 400 से 40 हो गए। …(व्यवधान) अहंकार का परिणाम है, 400 से 40 हो गए और सेवा भाव कापरिणाम है कि 2 से यहां आकर बैठ गए, 2 से निकल करके यहां आकर बैठ गए।…(व्यवधान) आप कहां से कहां पहुंच गए? अरे! मिलावटी दुनिया में जीना पड़ रहा है। आप कोई लम्बी बात करोगे, तो शोभा नहीं देगी।

जो लोग कहते हैं कि देश आगे बढ़ा, जैसे आंकड़े बता रहे थे, मैं कहता हूं कि खड़गेजी सीनियर व्यक्ति हैं, जरा उनके अभ्यास के लिए अगर हो सके तो, 1947 में जो देश आजाद हुए, उन्होंने 2014 तक क्या प्रगति की और 1947 में आजाद हुए हिंदुस्तान ने क्या प्रगति की है, यह लेखा-जोखा लोगे, तो पता चलेगा कि हर डगर-डगर पर आपकी विफलताएं नजर आएंगी। दुनिया के देशों ने इसी कालखण्ड में विश्व की सबसे बड़ी शक्तिशाली विषमताओं को पार किया है। हमारे पास सम्भावनाएं थीं, आपकी गति में दम नहीं था, आपकी नीति नहीं थी, आपके पास विजन नहीं था और इसी के कारण 5, 15 संस्थाओं का नाम देकर आप गीत गाते रहते हैं।

अगर उसी गति से चलते, देश को समस्याओं से मुक्त किया होता, अरे, किसान को पानी पहुंचा दिया होता, लोगों को घरों में बिजली पहुंचा दी होती।...(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे:क्या आपने पहुंचा दी?

श्री नरेन्द्र मोदी:हां, हमने 55 महीने में कर दिया है और आने वाले दिनों में देश में हम यही काम करने वाले हैं, हम करके रहने वाले हैं।

आखिर में, मैं कहना चाहता हूं, आज सुबह बसवन्ना के कुछ वचन खड़गे साहब पढ़ रहे थे।

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे :आपने पढ़े थे इसलिए पढ़ रहा था।

श्री नरेन्द्र मोदी:खड़गे साहब, आप तो कर्नाटक के हैं, इतने साल बाद क्यों पढ़ा? अगर यही 25-30 साल पहले पढ़ा होता तो जो बुरे रास्ते पर आप लोग चले गए, वह नहीं जाते। जो गलत काम पर चले गए, नहीं जाते। ...(व्यवधान) मैं चाहूंगा कि हर कांग्रेसी के घर में बसवन्ना के वचन, जो आज आपने पढ़ा न, उसे टंगवा कर रखिए। ...(व्यवधान)अभी जहां सरकार है, जहां मौका मिला है, वहां तो बड़े अक्षरों में लगाकर रखिए ताकि ये बीमारियां जो आपके यहां फलीफूली हैं, थोड़े लोग डरने लगें। इसलिए भी, वहां एक फोटो मोदी की मत रखना वरना बेचारे डर जाएंगे कि मुसीबत आएगी। ...(व्यवधान) जी हां, आप चिंता मत कीजिए, देश को लूटने वालों को मोदी डरा कर रहेगा। डरा कर रहेगा, देश ने मुझे इसी काम के लिए बिठाया है। ...(व्यवधान) देश ने मुझे इसी काम के लिए बिठाया है।...(व्यवधान) जिन्होंने देश को लूटा है, जिन्होंने देश को तबाह किया है, उनको डरना ही होगा। ...(व्यवधान) उनको डरना ही होगा।...(व्यवधान) इसीलिए तो जिंदगी खपाई है। ऐसे लोगों के खिलाफ लड़ने के लिए जिंदगी खपाई है।...(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन खड़गे : सब डराने की कोशिश कर रहे हैं।

श्री नरेन्द्र मोदी: बिल्कुल, इस देश में 'चोर', 'लुटेरे', 'बदमाशों' का डर बिल्कुल खत्म हो गया था, उसी के कारण देश बर्बाद हुआ है, उनके लिए डर पैदा करने के लिए देश ने मुझे यहां बिठाया है।…(व्यवधान) इसलिए हम इस काम को आगे बढ़ाने वाले हैं।…(व्यवधान)

अध्यक्ष जी, आखिर में, मैं एक बात कहकर अपनी बात को समाप्त करूंगा,

सूरज जाएगा भी तो कहां, सूरज जाएगा भी तो कहां।

उसे यहीं रहना होगा, यहीं हमारी सांसों में,

हमारी रगों में, हमारे संकल्पों में, हमारे रतजगों में।

तुम उदास मत हो, तुम उदास मत हो,

अब मैं किसी भी सूरज को नहीं डूबने दूंगा।

बहुत, बहुत धन्यवाद।

---

* Not recorded.